



स्वयं को कार्यकर्ता और आयोजक के रूप में कायम रखना

हम पर्यावरण कार्यकर्ताओं और आयोजकों को पृथ्वी और उसके निवासियों की गहन चिंता है, हमने इस संबंध में महत्वपूर्ण काम किया है। हमारे पास गर्व करने के लिए बहुत कुछ है। लेकिन संभव है कि आयोजन की दैनिक आपाधापी में हम अपनी उपलब्धियों को आसानी से भूल जाएं।

जब बदलाव लाने के हमारे प्रयास तीव्र विरोध के कारण असफल हो जाते हैं, तब हममें से कई लोग हताशा का अनुभव करते हैं। हम यह भी अनुभव कर सकते हैं कि हम शक्तिहीन, थके हुए, अकेले हैं और पर्याप्त स्मार्ट नहीं हैं, तथा हमें जो करना चाहिए, उसका दबाव महसूस कर सकते हैं। जब ऐसा महसूस करते हैं, तब बदलाव लाने के लिए प्रेरित रहना कठिन हो सकता है।

हम अक्सर भावनाओं को अनदेखा करने की कोशिश करते हैं और बदलाव के लिए काम करते रहते हैं, लेकिन भावनाओं पर ध्यान न देने से हम अपने ही स्वास्थ्य और हितों को नुकसान पहुंचा सकते हैं, या फिर दूसरों से अपने को अलग समझते हैं और उनसे जुड़ने में सक्षम नहीं होते। यहाँ तक कि हम एक-दूसरे की आलोचना करते हैं, क्रोधित होते हैं,

या एक-दूसरे को नुकसान पहुंचा सकते हैं। हम समाधानों के बारे में सोचने में असमर्थ हो सकते हैं और कार्यकर्ता, आयोजक और नेता बनना छोड़ सकते हैं। जिस काम की हम इतनी गहराई से परवाह करते हैं, हो सकता है कि उसे करने के लिए अब हमारे पास ऊर्जा ही न रहे।

दीर्घकाल तक कार्यरत रहने के लिए हमें एक मजबूत समर्थन प्रणाली की आवश्यकता है। हमें ऐसे रिश्ते चाहिए, जिनमें हम अपने साथी कार्यकर्ताओं और आयोजकों पर भरोसा करें और उन पर निर्भर रह सकें, समस्याएँ आने पर हम उनका सामना करें, उन्हें सुलझाएँ और एक साथ आगे बढ़ें। यदि हमारे पास ऐसे रिश्ते हैं, तो हम विकसित हो सकते हैं, प्रगति कर सकते हैं और जलवायु आपातकाल को समाप्त करने में अपना पूरा योगदान दे सकते हैं।

उत्पीड़क समाज

हम सभी को एक उत्पीड़क समाज में रहते हुए संघर्ष करना पड़ता है। हम नस्लवाद, वर्गवाद, लिंगवाद, मूल निवासियों के उत्पीड़न सहित कई अन्य प्रकार के अत्याचारों से पीड़ित हैं और इसके साक्षी भी हैं। उत्पीड़क समाज के ये संदेश



आत्मसात हो ही जाते हैं। ऐसे आंतरिक अत्याचार सहने के कारण हम खुद पर संदेह करते हैं, अपने को कमतर महसूस करते हैं और आपसी संबंधों को जीवित रखने के लिए हमें संघर्ष करना पड़ता है। आंतरिक अत्याचार के कारण हम अपने संगठनों या समुदायों के भीतर या आपस में विभाजित होकर सत्ता, नियंत्रण, मान्यता या संसाधनों के लिए एक-दूसरे के साथ प्रतिस्पर्धा कर सकते हैं। यह हमें हमारे उस साझा हित को समझने या उस पर कार्य करने से रोकता है, जिसके कारण हम एक न्यायपूर्ण और टिकाऊ भविष्य का

निर्माण कर सकते हैं। हमें सामूहिक रूप से खुद को आंतरिक उत्पीड़न से मुक्त करने की जरूरत है। हम उत्पीड़न और अन्य चोटों से उबर सकते हैं और जलवायु आपातकाल को समाप्त करने के अपने साझा लक्ष्य में फिर से जुड़ सकते हैं।

“संपूर्ण जीवसृष्टि की शाश्वतता” (सस्टेनिंग ऑल लाइफ) में हम निम्न मुद्दों पर काम करते हैं (1) पर्यावरणीय न्याय को समाप्त करने के बारे में सोचने और कार्य करने में बाधा डालनेवाली भावनात्मक चोटों के बारे में जागरूकता पैदा करना और (2) एक-दूसरे को ध्यानपूर्वक सुनना और



‘संपूर्ण जीवसृष्टि की शाश्वतता’ (सस्टेनिंग ऑल लाइफ – एसएएल) प्राथमिक स्तर पर काम करनेवाला एक अंतर्राष्ट्रीय संगठन है, जो लोगों के आपसी भेदभाव को समाप्त करने के संदर्भ में जलवायु आपातकाल को समाप्त करने के लिए काम कर रहा है। ‘नस्लवाद के खिलाफ संगठन’ (यूनाइटेड टू एंड रेसिज्म - यूईआर) में अलग-अलग देशों के विविध प्रकार के लोग शामिल हैं, जो दुनिया में नस्लवाद को खत्म करने के लक्ष्य के साथ-साथ अन्य सभी समूहों के प्रयासों का समर्थन करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। यूईआर और एसएएल ‘पुनर्मूल्यांकन समुपदेशन’ की परियोजनाएँ हैं और उनके साधनोंका उपयोग करते हैं। ‘पुनर्मूल्यांकन समुपदेशन’ एक ऐसा भली-भाँति परिभाषित सिद्धांत और अभ्यास है, जो उत्पीड़न और अन्य प्रकार के दुःखों से उत्पन्न भावनात्मक नुकसान से स्वयं को मुक्त करने में सभी आयुवर्ग और पृष्ठभूमि वाले लोगों की सहायता करता है, ताकि वे एक-दूसरे की प्रभावपूर्ण तरीके से मदद कर सकें। बारी-बारी से एक-दूसरे को सुनने और दुःखद भावनाओं को व्यक्त करने के लिए प्रोत्साहित करने से लोग पुराने दुखों से उबर सकते हैं और सोचने, बोलने तथा दूसरों को संगठित कर एक ऐसी दुनिया के निर्माण का नेतृत्व करने में सक्षम हो सकते हैं, जिसमें मनुष्य और अन्य जीवमात्र को महत्व देने के साथ ही पर्यावरण को भी पुनर्स्थापित और संरक्षित किया जाता है। फिलहाल ‘पुनर्मूल्यांकन समुपदेशन’ 95 देशों में मौजूद है।



SustainingAllLife.org



UnitedToEndRacism.org



sustaining_all_life



@sustainallife



SustainingAllLife



बसू जार चलिता



प्रत्येक को उन दुःख, भय और अन्य दर्दनाक भावनाओं को व्यक्त करने की प्रेरणा देना, जिनके कारण ये चोटें लगी हैं, और इस प्रकार वैयक्तिक या सामूहिक स्तर पर हुए नुकसान को कम करना। हममें से प्रत्येक को इन चोटों के कारण उत्पन्न दुःख, भय और अन्य दर्दनाक भावनाओं को दिखाना और व्यक्त करना चाहिए। इस प्रक्रिया के जरिए हम जलवायु संकट के बारे में अधिक स्पष्ट रूप से सोचने, गठबंधन को मजबूत करने और दुनिया को सही दिशा दिखाने के लिए मिलकर काम करने का आनंद ले सकते हैं। इससे सभी के लिए एक न्यायसंगत, टिकाऊ भविष्य का निर्माण करने के लिए हमें साहस, सहनशक्ति और आत्मविश्वास विकसित करने में मदद मिलती है।



कार्यकर्ता की प्रतिबद्धता

मैं अपनी पूरी बुद्धि का उपयोग करके दुनिया को बदलने का काम चुनता हूँ।

भविष्य में मेरा अच्छे आराम, अच्छे पोषण और अच्छे व्यायाम की स्थिति में होना आवश्यक है। मेरा स्वास्थ्य महत्वपूर्ण है।

‘अतीत’ जानकारी का एक उपयोगी स्रोत अवश्य है, लेकिन मेरी वर्तमान सोच का विकल्प कभी नहीं है।

मैं जो कर रहा हूँ, यदि मुझे उसमें आनंद नहीं मिल रहा, तो मेरे करने के तरीके में कोई गड़बड़ी है और मैं इसे ठीक कर दूँगा।



“संपूर्ण जीवसृष्टि की शाश्वतता और नस्लवाद के खिलाफ संगठन” का कार्य

यदि हम अगले पांच से दस वर्षों में अपनी अर्थव्यवस्था, अपनी ऊर्जा प्रणालियों और अपने जीवन में कुछ बहुत बड़े बदलाव करें, तो मानव-जनित जलवायु परिवर्तन के प्रभावों को सीमित करना और पर्यावरण को पुनर्स्थापित करना संभव है। ‘संपूर्ण जीवसृष्टि की शाश्वतता’ (सस्टेनिंग ऑल लाइफ) और ‘नस्लवाद के खिलाफ संगठन’ (यूनाइटेड टू एंड रेसिज्म) का मानना है कि नस्लवाद, स्थानीय लोगों के नरसंहार, वर्गवाद, लिंगवाद और अन्य उत्पीड़नों (oppressions) पर जब हम एक साथ विचार करेंगे, तभी पर्यावरण संकट का समाधान हो सकता है। पर्यावरण के विनाश और जलवायु परिवर्तन का प्रभाव इन उत्पीड़नों द्वारा लक्षित समूहों और अन्य कमजोर आबादी (बुजुर्ग, विकलांग और बहुत छोटे लोगों की आबादी सहित) पर सबसे अधिक पड़ता है। आवश्यक परिवर्तन लाने के लिए जलवायु परिवर्तन, नस्लवाद और शोषण के प्रभावों से लड़ने वाले दुनिया भर के हर पृष्ठभूमि के लोगों के बीच एक बड़े पैमाने पर आंदोलन की आवश्यकता होगी।

‘संपूर्ण जीवसृष्टि की शाश्वतता’ (सस्टेनिंग ऑल लाइफ) और ‘नस्लवाद के खिलाफ संगठन’ (यूनाइटेड टू एंड रेसिज्म) मानता है कि एक पर्याप्त बड़े और शक्तिशाली आंदोलन के निर्माण में आने वाली बाधाएँ इस प्रकार हैं - (1) राष्ट्रों और जन-समुदायों के बीच लंबे समय से चला आ रहा विभाजन (सामान्यतः उत्पीड़न और विशेष रूप से नस्लवाद और वर्गवाद के कारण होनेवाला विभाजन), (2) यह व्यापक भावना कि अब बहुत देर हो चुकी है और कोई भी कार्रवाई अप्रभावी होगी, (3) जलवायु संबंधी आपात स्थिति को स्वीकार न करना या उससे जुड़ने में विफलता, और (4) पर्यावरणीय संकट तथा हमारी आर्थिक प्रणाली की विफलताओं के आपसी संबंधों को प्रभावशाली तरीके से सुलझाने में आनेवाली कठिनाइयाँ। ऐसे मुद्दों के साथ ही अन्य मुद्दों को सुलझाने के लिए भी “सस्टेनिंग ऑल लाइफ और यूनाइटेड टू एंड रेसिज्म” काम करता है।

उत्पीड़न की भूमिका

हमारे समाज का आर्थिक और राजनीतिक स्वरूप ऐसा है कि विकास और लाभ की मांग करते समय जनसामान्य, अन्य सजीवों और पृथ्वी के प्रति सम्मान की भावना नगण्य रह जाती है। इसका परिणाम शोषण और उत्पीड़न है। जबरदस्त अन्याय करने, संसाधनों तक पहुँच सीमित करने, और अरबों लोगों के जीवन को नुकसान पहुँचाते हुए उत्पीड़न (जैसे नस्लवाद, वर्गवाद, लिंगवाद और युवा लोगों का उत्पीड़न) सभी को शिकार बनाते हैं। एक बार उत्पीड़न का निशाना बनने के बाद हम दूसरों के साथ वैसा ही चोट पहुँचानेवाला बर्ताव करते हैं, जैसा हमने अनुभव किया होता है। इस प्रक्रिया के परिणामस्वरूप हम मानसिक और भावनात्मक नुकसान (harm) का अनुभव करते हैं। हमारा अनुभव यह है कि भले ही लोग उत्पीड़क कार्य करने के लिए प्रेरित होते हों, पर ऐसा व्यवहार करना उनकी मूल प्रवृत्ति नहीं होती, बल्कि जब कोई व्यक्ति भावनात्मक रूप से घायल होता है, तभी यह प्रेरणा उत्पन्न होती है।

आर्थिक शोषण को स्थापित करने और उसे बनाए रखने के लिए उत्पीड़क समाज इस संवेदनशीलता का चालाकी से उपयोग करता है।

व्यक्तिगत नुकसान से उबरने का महत्व

उत्पीड़न और अन्य दुखद अनुभवों से हमारा जो मानसिक और भावनात्मक नुकसान होता है, उससे हमारी स्पष्ट रूप से सोचने की क्षमता बाधित होती है और यह नुकसान लोगों के समूहों को एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा कर देता है। इससे जलवायु आपात स्थिति के बारे में सोचना और उस पर प्रभावी ढंग से प्रतिक्रिया देना हमारे लिए कठिन हो जाता है।

उत्पीड़न को बनाए रखने रखने और अन्य दुखदायक व्यवहार को जन्म देने में सहायक चोटों से उबरना न तो तुरंत हो पाता है और न यह आसान काम है। हममें से कई लोग उबरने की इस व्यक्तिगत प्रक्रिया (personal healing process) का विरोध करते हैं। हो सकता है कि स्वयं को सुन्न करते हुए हम इस उत्पीड़नजन्य नुकसान को अनदेखा कर दें। हममें से कुछ लोग ऐसा भी मानते हैं कि हम कभी भी इस नुकसान से मुक्त नहीं होंगे। ‘संपूर्ण जीवसृष्टि की शाश्वतता’ (सस्टेनिंग ऑल लाइफ) और ‘नस्लवाद के खिलाफ संगठन’ (यूनाइटेड टू एंड रेसिज्म) में हमने सीखा है कि खुद को इन चोटों से मुक्त होना और प्रभावी आयोजन में आने वाली बाधाओं को दूर करना संभव है। यदि कोई हमारी बात ध्यान से सुनता है और हमें दुःख, भय और अन्य दर्दनाक भावनाओं को व्यक्त करने की अनुमति देकर उसके लिए प्रोत्साहित करता है, तो हम दुखद अनुभवों से उबर (heal) सकते हैं। यह हमारी प्राकृतिक रूप से उबरने की प्रक्रियाओं के माध्यम से होता है, जैसे कि बात करना, रोना, कांपना, गुस्सा व्यक्त करना और हंसना।

एक सहायक नेटवर्क में भावनात्मक दर्द को दूर करके, हम एकजुट, आशावान, विचारशील, आनंदमय और प्रतिबद्ध रह सकते हैं। परिणामस्वरूप जलवायु परिवर्तन और नस्लवाद के प्रभावों को रोकने के हमारे आंदोलन चलाने के लिए हमें ताकत मिलती है।



Sustaining All Life



अधिक जानकारी के लिए देखें:

www.sustainingalllife.org या www.unitedtoendracism.org
या लिखें: Sustaining All Life/United to End Racism
19370 Firlands Way N, Shoreline, WA 98133-3925 USA
ईमेल: sal@rc.org टेलीफोन: +1-206-284-0311